Date - 22 Jan 2022

इरेडा के लिए फंड: कैबिनेट

- हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (IREDA) में 1,500 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी है।
- इससे इरेडा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को 12,000 करोड़ रुपये उधार देने में सक्षम होगा।
- इससे पहले 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021' के एक भाग के रूप में इरेडा द्वारा 'व्हिसलब्लोअर पोर्टल' शुरू किया गया था।

फंड का महत्व:

- इस इक्विटी निवेश से लगभग 10,200 रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद मिलेगी और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में लगभग 749 मिलियन टन की कमी आएगी।
- भारत सरकार द्वारा 1500 करोड़ रुपये का अतिरिक्त इक्विटी निवेश इरेडा को सक्षम बनाएगा।
- अक्षय ऊर्जा (आरई) क्षेत्र में लगभग 12000 करोड़ रुपये का ऋण प्रदान कर 3500-4000 मेगावाट की अतिरिक्त क्षमता को सुगम बनाना।
- यह अपनी निवल संपत्ति को बढ़ाने के लिए आरई के क्षेत्र में वित्तपोषण में मदद करके भारत सरकार के लक्ष्यों की दिशा में बेहतर योगदान देगा।
- पूंजी-से-जोखिम-भारित परिसंपत्ति अनुपात (सीएआर) में सुधार करना ताकि इसके उधार और उधार संचालन को सुविधाजनक बनाया जा सके।
- सीआरएआर, जिसे सीएआर (पूंजीगत पर्याप्तता अनुपात) के रूप में भी जाना जाता है, यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि वित्तीय संगठनों के पास दिवालिया होने से पहले उचित मात्रा में नुकसान को अवशोषित करने के लिए पर्याप्त है।

इरेडा:

- यह एक मिनीरत्न (श्रेणी 1) कंपनी है जो 'नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय', भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है।
- इसका कार्य नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना और उन्हें विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

Yojna IAS

- इसे 'कंपनी अधिनियम, 1956' की धारा 4ए के तहत 'सार्वजनिक वित्तीय संस्थान' के रूप में अधिसूचित किया गया है।
- इसे 'भारतीय रिजर्व बैंक' के नियमों के तहत 'गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी' के रूप में पंजीकृत किया गया है।
- इसे वर्ष 1987 में एक 'गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान' के रूप में एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी के रूप में शामिल किया गया था।
- इसका उद्देश्य नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित परियोजनाओं को बढ़ावा देना, विकसित करना और वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

अब्दुल गफ्फार खान

- अब्दुल गफ्फार खान का जन्म **6** फरवरी **1890** को पाकिस्तान के एक पश्तून परिवार में हुआ था।
- अब्दुल गफ्फार खान, जिन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की, विद्रोही विचारों के व्यक्ति थे। इसलिए पढ़ाई के दौरान वह क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए।
- खान अब्दुल गफ्फार खान ने पश्तून लोगों को अंग्रेजों के दमन से बचाने की कसम खाई।
- 20 साल की उम्र में उन्होंने अपने गृहनगर उत्तम जय में एक स्कूल खोला, जो कुछ ही महीनों में सफल हो गया, लेकिन 1915 में ब्रिटिश सरकार द्वारा उनके स्कूल पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- अगले 3 वर्षों तक उन्होंने पश्तूनों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सैकड़ों गांवों की यात्रा की। कहा जाता है कि इसके बाद लोग उन्हें 'बादशाह खान' के नाम से बुलाने लगे।
- पश्तून आंदोलन के कारण प्रसिद्ध हुए खान अब्दुल गफ्फार खान ने महात्मा गांधी से मुलाकात की, वे उनसे काफी प्रभावित हुए और अहिंसक आंदोलनों के लिए उनकी प्राथमिकता बढ़ गई।
- अब्दुल गफ्फार खान को पेशावर में 23 अप्रैल 1923 को नमक आंदोलन में शामिल होने के आरोप में अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया था क्योंकि उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के उत्मानजई शहर में आयोजित एक बैठक में भाषण दिया था।
- अब्दुल गफ्फार खान अपने अहिंसक तरीकों के लिए जाने जाते हैं, जिसके कारण पेशावर सहित पड़ोसी शहरों में खान की गिरफ्तारी को लेकर विरोध प्रदर्शन हुए।
- वहां पहुंचे हजारों लोगों की आवाजाही देखकर अंग्रेज डर गए और उन्होंने लोगों को रोकने के लिए फायरिंग करने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही ब्रिटिश सैनिकों ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चला दीं।
- इस नरसंहार में करीब 250 लोगों की मौत हुई थी। इसे किस्सा ख्वानी बाजार नरसंहार भी कहा जाता है।
- उसी समय, गढ़वाल राइफल्स के सैनिक जिन्होंने नरसंहार से पहले अंग्रेजों के आदेश को मानने से इनकार कर दिया था, उनका कोर्ट-मार्शल किया गया और उन्हें कई वर्षों तक जेल में रखा गया। इनमें उत्तराखंड के वीर चंद्र सिंह गढ़वाली का नाम प्रमुख था।
- 1929-30 में एक संस्थागत आंदोलन के रूप में खुदाई खिदमतगार की स्थापना की गई। इसका अर्थ है ईश्वर की सेवा करना, इसका अर्थ है मनुष्य की सेवा करना। इसकी प्रतिबद्धता स्वतंत्रता, अहिंसा और धार्मिक एकता के लिए लड़ने की थी। इससे खुदाई खिदमतगार की नींव तैयार की गई।
- जब गांधी ने 1919 के रॉलेट सत्याग्रह के खिलाफ राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह का आह्वान किया, तो बादशाह खान भी उनके साथ हो गए।

- 1946 में जब बिहार और नोआखली में सांप्रदायिक दंगे हुए, तो बादशाह खान और गांधी एक साथ वहां गए। उन्होंने साथ में बिहार में काम किया और एक दूसरे के साथ उनका रिश्ता अंत तक चला।
- जब अखिल भारतीय मुस्लिम लीग भारत के विभाजन पर अड़ी हुई थी, तब बादशाह खान ने इसका कड़ा विरोध किया था। जून 1947 में उन्होंने पश्तूनों के लिए पाकिस्तान से अलग देश की मांग की, लेकिन यह मांग स्वीकार नहीं की गई।
- पाकिस्तान सरकार उन्हें अपना दुश्मन मानती थी, इसलिए उन्हें वहां कई सालों तक जेल में रखा गया. **20** जनवरी **1988** को नजरबंदी के दौरान पाकिस्तान में उनकी मृत्यु हो गई।
-

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी: विश्व लोकप्रिय नेताओं की सूची में सबसे ऊपर

- हाल ही में अमेरिका स्थित मॉर्निंग कंसल्टेंट पॉलिटिकल इंटेलिजेंस ने दुनिया भर में एक सर्वेक्षण किया। इस सर्वे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 71 फीसदी की अप्रूवल रेटिंग के साथ विश्व के नेताओं में शीर्ष पर हैं।

अन्य वैश्विक नेताओं की स्थिति

- अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन 13 विश्व नेताओं की सूची में 43% अनुमोदन रेटिंग के साथ छठे नंबर पर हैं। बिडेन के बाद कनाडा के राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो को 43% की अनुमोदन रेटिंग के साथ और ऑस्ट्रेलियाई प्रधान मंत्री स्कॉट मॉरिसन को 41% की अनुमोदन रेटिंग के साथ स्थान मिला।
- नवंबर 2021 में भी प्रधानमंत्री मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेताओं की सूची में सबसे ऊपर थे।
- मॉर्निंग कंसल्ट पॉलिटिकल इंटेलिजेंस वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इटली, जापान, मैक्सिको, दक्षिण कोरिया, स्पेन, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका में सरकारी नेताओं की अनुमोदन रेटिंग और देश के प्रक्षेपवक्र पर नज़र रख रहा है।
- मॉर्निंग कंसल्ट ने अपनी वेबसाइट पर कहा, "नवीनतम अनुमोदन रेटिंग 13-19 जनवरी, 2022 तक एकत्र किए गए आंकड़ों पर आधारित हैं। अनुमोदन रेटिंग प्रत्येक देश में अलग-अलग नमूना आकारों के साथ वयस्क निवासियों के सात-दिवसीय चलती औसत पर आधारित है।
- मई 2020 में, इस वेबसाइट ने 84% की स्वीकृति के साथ प्रधान मंत्री मोदी को सर्वोच्च रेटिंग दी। मई 2021 में यह घटकर 63% पर आ गया था।

सर्वेक्षण में शीर्ष अनुमोदन रेटिंग वाले नेता

- नरेंद्र मोदी (भारत): 71%
- लोपेज़ ओब्रेडोर (मेक्सिको): 66%
- मारियो ड्रैगी (इटली) : 60%
- फुमियो किशिदा (जापान): 48%
- ओलाफ स्कोल्ज़ (जर्मनी): 44%

Yojna IAS

- जो बिडेन (यूएसए): 43%
- जस्टिन ट्रूडो (कनाडा): 43%
- स्कॉट मॉरिसन (ऑस्ट्रेलिया): 41%
- पेड्रो सांचेज़ (स्पेन): 40%
- मून जे इन (दक्षिण कोरिया): 38%
- जायर बोल्सोनारो (ब्राजील): 37%
- इमैनुएल मैक्रों (फ्रांस): 34%
- बोरिस जॉनसन (यूनाइटेड किंगडम): 26%
-

Swadeep Kumar

Yojna IAS